बिहार में 1999 का लोकसभा चुनाव में मतदान व्यवहार की स्थिति

डॉ० शैलेश कुमार

1990 के दशक में बिहार में हुए हर चुनाव की भाँति 1999 के लोकसभा चुनावों में भी प्रमुख मुद्दा लालू प्रसाद ही थे। लालू के सामाजिक न्याय की राजनीति और मजबूत सामाजिक आधार को कोई भी विपक्षी दल तगड़ी चुनौती देने में सफल नहीं हो पाया था। भाजपा–समता पार्टी गठबंधन ने लालू को चुनौती दी, लेकिन वे लालू को निर्णायक रूप से हराने में कामयाब नहीं हो पाए। इन चुनावों से पहले लालू विरोधी राजनीतिक ताकतों की एकजुटता बढ़ी। समता पार्टी और जनता दल का विलय हो गया और जनता दल (यूनाइटेड) का गठन हुआ। जद (यू) केंद्रीय स्तर पर भाजपा के नेतृत्व में बने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का हिस्सा बन गया। बिहार में भाजपा–जद (यू) ने समता पार्टी के समय से चला आ रहा अपना पुराना गठबंधन कायम रखा। भाजपा ने 29 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए और 23 सीटों पर जद (यू) ने उम्मीदवार खड़े किए। एक सीट इन्होंने अपने तीसरे साझीदार बिहार पीपुल्स पार्टी (बिपीपा) के लिए छोड़ी। कांग्रेस और राजद ने चुनावी गठबंधन किया। इस बार दोनों दलों ने आपसी गठबंधन को जमीनी स्तर पर लागू करने की कोशिश की। राजद ने 38 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए और बाकि 16 सीटें इसने कांग्रेस के लिए छोड़ दीं। इन चुनावों में वामपंथी दलों ने राजद या किसी दूसरे दल से कोई गठबंधन नहीं किया और अपने सीमित प्रभाव वाले क्षेत्र में इन्होंने अपना उम्मीदवार खड़ा किया। वास्तव में ये चुनाव पूरी तरह दो ध्रुवीय थे– एक ध्रुव पर भाजपा गठबंधन था और दूसरे ध्रुव पर राजद गठबंधन।